दैनिक जागरण, भोपाल
28 OCT 2010

वनवासी गौरव की पुनर्स्थापना का अभिनव प्रयास

वनवासी सम्मान यात्रा को एक अच्छी शुरुआत बता रही हैं - स्वाति तिवारी

मध्यप्रदेश में भारत की सर्वाधिक आदिवासी आबादी निवास करती है। प्रदेश की लगभग एक चौथाई जनसंख्या आदिवासी है। उनके समग्र विकास के बगैर प्रदेश के विकास की बात बेमानी है। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने अब तक अपनी विकास यात्राओं को अलग-अलग आयामों से कभी खेत-खलिहानों में किसानों से जोड़ा तो कभी गांव चौपालों में ग्रामीण जनता से। इस बार उनकी विकास यात्रा 28 अक्टूबर 2010 से इसी एक चौथाई आबादी वाले आदिवासियों से जुड़कर वनवासी सम्मान यात्रा के रूप में फिर आगे गतिमान होगी। वनवासी सम्मान यात्रा का शुभारम्भ खण्डवा यानी पूर्वी निमाड़ की उस भूमि से होगा, जहां रॉबिन हुड के नाम से प्रसिद्ध हुए क्रांतिकारी टंट्या भील का जन्म हुआ था। वनवासी क्षेत्र का एक ऐसा क्रांतिकारी जिसने अंग्रेजों और अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ आदिवासियों को एकत्र कर क्रांति का बिगुल बजाया था।

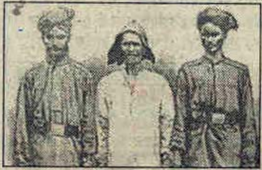

क्रांतिकारी टंट्या भील एक ऐसे जननायक हैं जो वनवासियों के अदम्य साहस, चमत्कारी स्फूर्ति और संगठन शक्ति के प्रतीक हैं। ऐसा आदिवासी जननायक जिसे अंग्रेज सरकार 'इंडियन रॉबिन हुड' (जननायक) कहती थी।

यात्रा का प्रथम चरण वनवासी क्षेत्र के एक सौ इक्कीस वर्ष पूर्व देश के इतिहास क्षितिज पर बारह वर्षों तक सतत जगमगाते रहे क्रांतिकारी टंट्या भील को समर्पित है, जो जनजाति के गौरव हैं। वे एक ऐसे जननायक हैं जो वनवासियों के अदम्य साहस, चमत्कारी स्फूर्ति और संगठन शक्ति के प्रतीक हैं। एक ऐसा आदिवासी जननायक जिसे अंग्रेज सरकार 'इंडियन रॉबिन हुड' (जननायक) कहती थी। द न्यूयार्क टाइम्स के 10 नवम्बर 1889 के अंक में टंट्या मामा की गिरफ्तारी की खबर प्रमुखता से प्रकाशित हुई थी। टंट्या भील का जन्म तत्कालीन सी.पी. प्रांत के पूर्व निमाड़ जिले की पंधाना तहसील के बड़दा गांव में हुआ था। भीलों के कौशल का प्रतीक टंट्या समाजवादी सपनें साकार करने के लिए अंग्रेजों और शोषकों का धन उनका सरकारी खजाना लूट कर जरूरतमंदों और गरीबों में बांट देता था। छापामार युद्ध कौशल, अचूक निशानेबाज भीलों की पारम्परिक धनुर्विद्या में निपुण, जेल के सीखचों को तोड़कर भाग जाने में समर्थ टंट्या का जीवन जंगल, घाटी और अरण्य बीहड़ों और पर्वतों में अंग्रेजों और होल्कर राज्य की शक्तिशाली सेना से लोहा लेते हुए बीता। अंग्रेजों ने इस जनमानस को जनविद्रोह के डर से कब और किस तारीख को फांसी की सजा दी यह गुप्त रखा था। मान्यता है कि फांसी के बाद उनके शव को इंदौर-खंडवा रेलमार्ग पर फेंक दिया गया था। वहां आज भी एक समाधि बनी है जो लोगों में टंट्या मामा की समाधि के रूप में आस्था और विकास की जगह है। लोक मान्यता है कि अगर कोई ट्रेन वहां नहीं रुकती है तो वह कुछ दूर जाकर स्वमेव रुक जाती है, रेल चालक भी पातालपानी पर टंट्या मामा को सलामी देने के लिए कुछ क्षण के लिए रेल को रोकते हैं। उन्हीं क्रांतिकारी वनवासी जननायक को प्रणाम करती वनवासी सम्मान यात्रा की रेल उनके जन्म स्थल से चलेगी जो अपने प्रथम चरण में निमाड़ से चार जिलों खंडवा, बुरहानपुर, खरगौन और बड़वानी में अपने पड़ाव डालेगी। इसी निमाड़ के वनवासी टंट्या ने आदिवासियों को एकत्र कर क्रांति का बिगुल बजाया था। मध्यप्रदेश की अनुसूचित जनजातियों एवं वनवासियों के सम्मान में उनके समग्र विकास के उद्देश्य से मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान खंडवा से प्रदेश के आदिवासी अंचलों के सर्वांगीण विकास का बिगुल बजाने जा रहे हैं जिसके उद्घोष से निकलेगी प्रदेश के विकास में समुदाय की सक्रिय सहभागिता, प्रदेश में वन अधिकार अधिनियम का प्रभावी क्रियान्वयन, शिकायतों और समस्याओं का त्वरित निराकरण और अनुसूचित जनजाति के हितग्राहियों को शासन की विभिन्न योजनाओं का समुचित लाभ सुनिश्चित किए जाने के प्रयास की स्वर लहरी। इस यात्रा के दौरान प्रदेश के आदिवासी अंचलों के चयनित क्षेत्रों का भ्रमण करते हुए मुख्यमंत्री चाहते हैं आदिवासी अंचलों में, जनजातियों के हितलाभ से प्रत्यक्षतः जुड़ी गतिविधियों जैसे -पात्र हितग्राहियों को वन अधिकारियों को मान्यता, मनरेगा के अंतर्गत मजदूरी का समय पर भुगतान, सार्वजनिक वितरण प्रणाली का विशेषकर दूरस्थ एवं पहुंच विहीन क्षेत्रों में प्रभावी क्रियान्वयन, छात्रावास और आश्रम शालाओं की व्यवस्था, विद्यालयों और अस्पतालों की सुव्यवस्था, पात्र हितग्राहियों को कपिल धारा के कुएं एवं मोटरपम्प आदि की स्वीकृति, इंदिरा आवास योजना का लाभ प्रदान करना, पुलिस एवं आबकारी विभाग से संबंधित शिकायतों का निवारण, छात्रवृत्ति और शिष्यवृत्ति प्रदाय, सामाजिक सुरक्षा योजनाओं आदि महत्वपूर्ण कार्यक्रमों के संबंध में प्राप्त आवेदनों का निराकरण विशेष रूप से किया जाए। लोकोक्तियां बताती हैं निमाड़ के जंगल, यहां के अरण्य वन भी संस्कृति के संदेश वाहक रहे हैं। निमाड़ की अपनी अलग पहचान है, एक संस्कृति जो नर्मदा के किनारे-किनारे विकसित हुई। इसका इतिहास समृद्ध है। यहां पुरापाषाण युगीन आदिम सभ्यता एवं प्रस्तर युगीन प्रमाण आज भी मौजूद हैं। पौराणिक गाथाओं में ओंकार मान्धाता ओंकारेकार ज्योतिर्लिंग भी है और असीरगढ़ के जंगलों में भटकते अकास्थामा की कथाएं भी। मुमताज महल की यादों से सजा बुरहानपुर भी है और किशोरकुमार का सुमधुर कंठ भी। नेपानगर कागज का कारखाना भी है माखनलाल चतुर्वेदी के शब्द भी। यहां राम के वनपथगमन के चिह्न भी। आदिम सभ्यता के साथ-साथ आबोहवा, रीति-रिवाज, रहन-सहन, भाव-भाषा और लोक संस्कृति की समृद्ध परम्पराओं वाली एक खास पहचान भी है, जो निमाड़ी संस्कृति कहलाती है। अम्बाड़ी की भाजी और ज्वार की रोटी वाला सोंधा-सोंधा देशी भोजन भी है।

अबुल फजल ने निमाड़ के इस जिले के लिए अपने वृत्तांत में लिखा है कि जिले के मूल निवासी भील, कुनबी और गोंड थे। आज फिर एक नया वृत्तांत आदिवासी, जनजातीय, वनवासी सम्मान यात्रा के रूप में लिखा जाए जो बरसों-बरस तक वनवासियों को विकास के पथ पर सम्मान देता रहे। यात्रा अपने उद्देश्य में एक तीर्थयात्रा में बदल जाए, क्या यह हो सकता है? ऐसा हो यही मंगल कामना है।

(लेखिका जानी-मानी साहित्यकार हैं)